# मंत्र: निर्वाण षट्कम in Hindi

यह श्लोक आदि शंकराचार्य द्वारा रचित "निर्वाण षटकम्" का हिस्सा है। इसके छह पद हैं, और प्रत्येक पद आत्म-साक्षात्कार की गहरी समझ को व्यक्त करता है। इसका उद्देश्य अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को स्पष्ट करना है। नीचे इन श्लोकों का विस्तार से हिंदी में विवरण दिया गया है:

श्लोक **1**:
"मनो-बुद्धि-अहंकार चित्तादि नाहं
न च श्रोत्र-जिह्वे न च घ्राण-नेत्रे।
न च व्योम-भूमी न तेजो न वायु
चिदानंद-रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ १॥"

अर्थ:
मैं मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त नहीं हूँ। मैं श्रवण, जिह्वा, घ्राण और नेत्र भी नहीं हूँ। मैं आकाश, पृथ्वी, अग्नि और वायु भी नहीं हूँ। मेरा वास्तविक स्वरूप चिदानंद (शुद्ध चेतना और आनंद) है, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।

श्लोक **2**:
"न च प्राण-संज्ञो न वै पञ्च-वायु:
न वा सप्त-धातुर्न वा पञ्च-कोष:।
न वाक्-पाणी-पादौ न चोपस्थ पायु:
चिदानंद-रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ २॥"

अर्थ:
मैं प्राण या पञ्चवायु (प्राण, अपान, व्यान, उदान, और समान) नहीं हूँ। न ही मैं सप्त-धातु (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र) हूँ, और न ही पञ्चकोष (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय) हूँ। मैं वाक्, पाणी, पाद, उपस्थ और पायु (संवेदनाएँ और अंग) भी नहीं हूँ। मेरा वास्तविक स्वरूप चिदानंद है, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।

श्लोक **3**:
"न मे द्वेष-रागौ न मे लोभ-मोहौ
मदे नैव मे नैव मात्सर्य-भाव:।

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष:
चिदानंद-रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ ३॥"

अर्थ:
मुझे द्वेष और राग (विरक्ति और आसक्ति) नहीं है। मुझे लोभ और मोह (लालच और भ्रम) नहीं है। न ही मुझे मद और मात्सर्य (अभिमान और ईर्ष्या) है। न मैं धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष हूँ। मेरा वास्तविक स्वरूप चिदानंद है, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।

श्लोक **4**:
"न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञा:।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानंद-रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ ४॥"

अर्थ:
मैं पुण्य या पाप नहीं हूँ। न ही मैं सुख और दुख हूँ। न मैं मंत्र, तीर्थ, वेद, या यज्ञ हूँ। मैं भोजन, भोज्य (खाया जाने वाला) और भोक्ता (खाने वाला) भी नहीं हूँ। मेरा वास्तविक स्वरूप चिदानंद है, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।

श्लोक **5**:
"न मे मृत्यु न मे जातिभेद:
पिता नैव मे नैव माता न जन्मो।
न बन्धुर्न मित्र: गुरुर्नैव शिष्य:
चिदानंद-रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ ५॥"

अर्थ:
मुझे मृत्यु नहीं है, न ही मुझे जाति का भेद है। मेरा न कोई पिता है, न माता, न जन्म। न मुझे कोई बंधु (रिश्तेदार) है, न मित्र, न गुरु, न शिष्य। मेरा वास्तविक स्वरूप चिदानंद है, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।

श्लोक **6**:
"अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो
विभुत्त्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणां।
सदा मे समत्त्वं न मुक्तिर्न बंध:
चिदानंद रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ ६॥"

अर्थ:
मैं निर्विकल्प (बिना विकल्प के) और निराकार रूप हूँ। मैं सर्वत्र हूँ, और सर्व इन्द्रियों में व्याप्त हूँ। मैं सदा सम (समान) हूँ, मुझे न मुक्ति की आवश्यकता है, न बंधन की। मेरा वास्तविक स्वरूप चिदानंद है, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।

इन श्लोकों में, आत्मा को शरीर, मन, इन्द्रियाँ और सांसारिक बंधनों से परे मानते हुए, उसकी शुद्धता और दिव्यता को स्थापित किया गया है। यह अद्वैत वेदांत की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को सरल और सुंदर तरीके से प्रस्तुत करता है।

## Nirvana Shatakam in English

**manobuddhyahaṅkāra cittāni nāhaṃ**
**na ca śrotrajihve na ca ghrāṇanetre .**
**na ca vyoma bhūmirna tejo na vāyuḥ**
**cidānandarūpaḥ śivo'ham śivo'ham ||1||**

**na ca prāṇasaṃjño na vai pañcavāyuḥ**
**na vā saptadhātuḥ na vā pañcakośaḥ .**
**na vākpāṇipādaṃ na copasthapāyu**
**cidānandarūpaḥ śivo'ham śivo'ham ||2||**

**na me dveṣarāgau na me lobhamohau**
**mado naiva me naiva mātsaryabhāvaḥ .**
**na dharmo na cārtho na kāmo na mokṣaḥ**
**cidānandarūpaḥ śivo'ham śivo'ham ||3||**

**na puṇyaṃ na pāpaṃ na saukhyaṃ na duḥkhaṃ**
**na mantro na tīrthaṃ na vedā na yajñāḥ .**
**ahaṃ bhojanaṃ naiva bhojyaṃ na bhoktā**
**cidānandarūpaḥ śivo'ham śivo'ham ||4||**

**na mṛtyurna śaṅkā na me jātibhedaḥ**
**pitā naiva me naiva mātā na janmaḥ .**
**na bandhurna mitraṃ gururnaiva śiṣyaṃ**
**cidānandarūpaḥ śivo'ham śivo'ham ||5||**

**ahaṃ nirvikalpo nirākārarūpo**
**vibhutvācca sarvatra sarvendriyāṇām .**
**na cāsaṅgataṃ naiva muktirna meyaḥ**
**cidānandarūpaḥ śivo'ham śivo'ham ||6||**